सीहोर एक परिचय

- यह मालवा के पठार एवं विध्यांचल पर्वत माला पर स्थित है। 800 वर्ष के शिलालेख से ज्ञात है कि इसका पूर्व नाम सिद्धपुर था।
- 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की जनसंख्या 13,11,008 हैं।
- जिले में सात तहसीलें है।
- सीहोर जिला म.प्र. के पिछड़े जिलों में आता है, किन्तु उच्चशिक्षा के क्षेत्र में जिले में एक इंजीनियरिगं कॉलेज, एक पालीटेक्निक कॉलेज, 1956 में स्थापित शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सहित 9 शासकीय महाविद्यालय एवं 9 प्रायवेट कालेज हैं।
- यह राजधानी भोपाल से 37 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

हमारे लक्ष्य एवं ध्येय

- समाज में सकारात्मक भूमिका निभाने हेतु युवा पीढ़ी को गुणात्मक शिक्षा एवं शोध के अवसर प्रदान करना।
- व्यावसायिक एवं उद्यमी समाज के परिदृश्य के अनुरूप आवश्यक सभी क्षेत्रों में युवा पीढ़ी के कौशल को तराशना, दक्षताऐं प्रदान करना।
- युवा पीढ़ी में आत्म – विश्वास का संचार, व्यक्तित्व विकास, अनुसंधानात्मक प्रवृत्तियों, समानता की भावना तथा राष्ट्रप्रेम की भावना प्रस्फुटित करने हेतु वातावरण प्रदान करना।
- ज्ञानपूर्ण और कल्याणकारी समाज के सत्त उन्नयन के लिये शिक्षा के सदुपयोग से मुख्य भूमिका का निर्वहन करना।
- महाविद्यालय के सभी शैक्षणिक एवं गैर – शैक्षणिक कार्यक्रमो की दिशा, विद्यार्थियों को समाज के नव – निर्माण, समानता के अधिकारी एवं गरिमामय व्यक्तित्व की सीख देने की ओर केन्द्रित होगी ताकि समुचित शिक्षा के अलोक से विद्यार्थी एव सुसंस्कृत, उतरदायी, संवेदनशील व्यक्ति तथा देश के श्रेष्ठ नागरिक बन सकें।
-

महाविद्यालय का सुनहरा इतिहास

- मध्यप्रदेश शासन के उच्चशिक्षा विभाग की महतीयोजना के तहत प्रत्येक जिला मुख्यालय पर एक कन्या महाविद्यालय स्थापित करना।
- इसी श्रंखला में 1984 में इस महाविद्यालय की स्थापना की गई।
- प्रारंभ में एक निजी स्कूल के भवन में संचालित किया गया था। तत्कालीन समय में केवल कला संकाय के अंतर्गत आने वाले विषयों का अध्यापन किया गया। इन विषयों में हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति विज्ञान, समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र, उर्दू एवं होम सांइस सम्मिलित हैं। उपरोक्त विषयों में एक – एक सहायक प्राध्यापक का पद निर्माण किया गया था।
- यह महाविद्यालय बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल से संबद्ध है।
- प्रारम्भ में छात्राओं की संख्या कम थी, किन्तु इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है। इसी कारण से शासन ने 1992 में महाविद्यालय के लिए स्वयं का भवन निर्मित कराया, जो आज वर्तमान स्वरूप में है।
- यह जिले का एक मात्र कन्या महाविद्यालय है। यहॉ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राये स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर का अध्ययन पूर्ण कर रही हैं।

महाविद्यालय का क्रमशः विकास

- वाणिज्य शिक्षा के बढ़ते प्रभाव ने महाविद्यालय को भी प्रभावित किया है। छात्राओं एवं अभिभावको की मांग पर वाणिज्य संकाय की कक्षायें 1998 से प्रारम्भ की गई हैं।
- सन 2009 – 10 से एक सहायक प्राध्यापक का पद (वाणिज्य) स्वीकृत किया गया है। 2018 में 6 सहायक प्राध्यापक के पद स्वीकृत किये गये है।
- प्रत्येक संकाय में छात्राओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।
- कम्प्यूटर शिक्षा के बढ़ते प्रभाव के कारण बी.कॉम. (सामान्य) के साथ बी.कॉम. (कम्प्यूटर) की कक्षाये स्ववित्तीय योजनान्तर्गत 2003–04 में प्रारम्भ की गई है। छात्राओं ने इसमें सर्वाधिक रूचि दिखाई हैं।
- प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कला संकाय में इतिहास विषय 2002–03 में स्ववित्तीय योजना के अन्तर्गत प्रारंम्भ किया गया है।

- ❖ इसी श्रंखला में (स्ववित्तीय योजनान्तर्गत) छात्राओं के हित में बी.सी.ए. एवं बी.बी.ए. की कक्षायें 2010 –11 से प्रारंभ की गई है।
- ❖ सत्र 2011–12 में क्रीड़ा गतिविधियो हेतु 1.6 एकड़ जमीन शासन से प्राप्त।
- ❖ स्ववित्तीय पाठ्यक्रमों को प्रारंभ करने में महाविद्यालय की जनभागीदारी समिति का पूर्ण सहयोग रहा है।
- ❖ महाविद्यालय में छात्रावास संचालित है।
- ❖ क्रीड़ा गतिविधियो हेतु बहुउद्देशीय भवन निर्माण किया गया।